प्राचीन भारत का इतिहास, Hons. Paper-I

Q. → मुहम्मद बिन कासिम का सिन्ध पर आक्रमण का वर्णन करें

Ans → मुहम्मद बिन कासिम का सिन्ध पर आक्रमण के समय सिन्धु के ऊपर राजा दाहिर राज्य करता था। उसमें योग्यता का भारी अभाव था, जिसके फलस्वरूप उसका शासन प्रबंध बहुत ही ढीला-ढाला तथा असंतोषजनक था। उसका साम्राज्य चार प्रान्तों में बंटा हुआ था, वे सभी स्वतन्त्र हो चले थे। इस तरह उनका साम्राज्य नष्ट-भ्रष्ट होने को था। उसकी प्रजा में भी बड़ा असंतोष था। उसके राज्य की आर्थिक स्थिति दम तोड़ रही थी। फलतः सर्वत्र अशान्ति तथा अव्यवस्था थी। भारत से अलग होते ही उसकी स्थिति अत्यन्त ही नाजुक हो गई। पड़ोसी से सहायता भी उसको मिलने की आशा नहीं थी। इसलिए इतिहासकारों का यह भी मत है कि उनलोगों के बिना लड़े ही मुहम्मद बिन कासिम को सिन्ध के अन्य नगरों तथा राजधानी पर आक्रमण करने का मौका दे दिया था। लेकिन इतिहासकारों का यह मत सत्यता से बहुत दूर जान पड़ता है क्योंकि दाहिर उतना काहिल नहीं था। अंततः दोनों में भयंकर युद्ध हुआ।

यह ठीक है कि मोहम्मद बिन कासीम एवं दाहिर में कोई तुलना नहीं थी। मुहम्मद बिन कासिम के शरीर में अभी गर्म रक्त प्रवाहित हो रहा था। उसका शरीर गठीला था। वह अत्यन्त ही साहसी और महत्वाकांक्षी युवक था। उसने भारत पर आक्रमण करने की पूर्ण तैयारी की थी। उसके पास 500 चुने हुए वीर सीरियन और इराकी घुड़सवार लगभग 6,000 से ऊँची सेना और 3,000 सामान ढोने वाले ऊँट थे। इसी विशाल सेना से उसने भारत पर आक्रमण किया था। इतना ही नहीं मकरान के निकट

मुहम्मद हारून के सेनापतित्व में एक सैनिक टुकड़ी को समुद्री रास्ते से भेजा गया और एक तोपखाना भी उसे मिल गया था। दाहिर से असंतुष्ट सिन्ध के जाट और मेड़ जाति के लोग भी मुहम्मद बिन कासिम की सेना में आ मिले थे। परन्तु अभागे दाहिर के पास न तो इतनी विशाल सेना थी और न तोपखाने ही। इस तरह युद्ध की तैयारी दोनों तरफ से थी।

युद्ध अनिवार्य हो गया था। मुहम्मद बिन कासिम अपनी विशाल सेना के साथ आगे बढ़ता गया। सन् 711 ई० में जाड़े के मौसम में उन्होंने सर्वप्रथम देवल नगर पर हमला बोल दिया। यहाँ किसी भेदिये ने देवल के झंडे का भेद खोल दिया। देवल में एक बहुत बड़ा मंदिर था; जिनपर लाल रंग का झंडा फहरा रहता था। सर्वप्रथम अरबों ने झंडे को गिरा दिया। अन्ध-विश्वासी भारतीयों का इस घटना से दिल दहल गया, क्योंकि इन लोगों को यह विश्वास था कि झंडा गिरना उनकी पराजय स्वीकार करना है।

अतः उनकी हार अब निश्चित हो गई थी। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। हिन्दुओं की करारी हार हो गयी। इसके बाद मुसलमानों ने हिन्दुओं को इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आदेश दिया। लेकिन वीर हिन्दुओं ने उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया। इसकी खबर पाते ही मुहम्मद बिन कासिम क्रोध से आग बबूला हो गया और उसने शीघ्र ही अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि 17 साल के ऊपर वाले सभी व्यक्तियों को हत्या कर दी जाय। उसकी इस आज्ञा का उसके सैनिकों ने अक्षरशः पालन किया और 72 घंटों तक लगातार मुसलमानों ने हिन्दुओं के खून से होली खेली। असंख्य हिन्दू नर-नारी मौत के घाट

उतार दिये गये। वास्तव में वह रक्तपात का भीषण दृश्य हुआ। शेष बच्चे और स्त्रियों को दास बना लिये गये। मुहम्मद बिन कासिम ने केवल प्रसिद्ध मंदिर को ध्वस्त कर उसके स्थान पर बुलन्द मस्जिद का निर्माण करवाया। वहाँ पर उसने एक सैनिक छावनी भी बनवायी और 4,000 मुसलमानों को वहाँ रहने की आज्ञा दे दी। इसके बाद मुहम्मद बिन कासिम ने लूट के कुछ भाग और 5,000 स्त्रियों को इराक के गवर्नर हज्जाज के पास भेज दिया और शेष धन को उसके सैनिकों में बाँट दिया। इसके बाद मुहम्मद बिन कासिम ने अपनी सिन्ध-विजय और आतंक (Terror) का ब्यौरा ईराक के शाह हज्जाज के पास भेजा। इस ब्यौरा को पढ़कर वह बहुत खुश हुआ था और उसने मुहम्मद बिन कासिम के पत्र के उत्तर में लिखा - "ईश्वर की आज्ञा है कि काफिरों को शरण मत दो।" लोगों की सुरक्षा के निमित्त अधिक तन्मयता का प्रदर्शन मत करो। इससे तुम्हारा कार्य बहुत बढ़ जायेगा। अब उच्च पदाधिकारियों के अतिरिक्त, किसी अन्य दुश्मन को शरणागत मत बनाओ।

देबल को अधीकृत कर लेने के बाद मुहम्मद बिन कासिम ने निरून की और कूच किया। निरून की अधिकतर जनता बौद्ध थी। इस नगर को भी मुहम्मद बिन कासिम ने बात की बात में रौंद डाला। अतः इस नगर पर भी उसने बहुत सरलता से अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने अपनी विशाल सेना को सेहवान और जयें को राजधानी सीसम की ओर प्रस्थान करवाया। इन दोनों जगहों पर भी उसका जबर्दस्त हमला हुआ और वह विजय करता हुआ ब्राह्मणवाद पहुँचा।

ब्राह्मणवाद पर हमला - ब्राह्मणवाद दाहिर की राजधानी

थी। निरुन, सीसम और सेहवान पर अपनी विजय पताका लहराते हुए मुहम्मद बिन कासिम ब्राह्मणवाद पहुँचा। वहाँ के शासक दाहिर ने दलबल से उसका सामना किया। अतः 20 जून, 712 ई० को दोनों में भीषण युद्ध हुआ।

इस युद्ध की भीषणता में दाहिर बहुत ही बुरी तरह घायल हो गया। अन्ततः वह अपने शत्रुओं के मार से परलोक सिधार गया। उसके बाद उसने राजा दाहिर की विधवा रानीबाई से विवाह किया। अबोर पर विजय प्राप्त किया। इसके बाद मुहम्मद बिन कासिम मुलतान पर विजय प्राप्त किया। लगे हाथों उसने कन्नौज को भी जीतना चाहा था। परंतु इसी बीच वह इस धरा-धाम पर से उठ गया।

इस महान विजेता का अन्त बड़ा ही दुःखद हुआ। जितनी तीव्र गति से उसका उत्थान हुआ था, उसी वेग से उसका पतन भी हुआ। उसकी मृत्यु के संबंध में इतिहासकारों का यह मत है कि राजा दाहिर की दोनों राजकुमारियाँ जब खलीफा वालिद के सामने पेश की गई तो उन्होंने यह कहा कि मुहम्मद बिन कासिम ने दोनों को यहाँ भेजने से पहले ही उनका कौमार्य नष्ट कर दिया है। इसलिए वे खलीफा के रनिवास में रहने योग्य नहीं रह गयी है। इतना सुनते ही खलीफा ने क्रुद्ध होकर यह आज्ञा दी कि मुहम्मद बिन कासिम को जिन्दा ही बैल की चमड़ी में सीकर दरबार में पेश किया जाए। इस संबंध में इतिहासकार मीर-मासूम ने कहा है कि- "3 दिनों के बाद उसके प्राण पखेरू उड़ गये।"

Dr. D. Jha
Dept. of History